Volume: 5 Issue: 6 Pages: 99-101

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक चुनौतियाँ और उनकी शिक्षण दक्षता

[*1] डॉ. सुबोध कुमार

[*1] सहायक प्रोफेसर, आरटीसी बी.एड. कॉलेज, रांची, झारखंड, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 18/May/2026
Accepted: 19/June/2026

***Corresponding Author**
डॉ. सुबोध कुमार
सहायक प्रोफेसर, आरटीसी बी.एड. कॉलेज, रांची, झारखंड, भारत।

सारांश
माध्यमिक शिक्षा भारत की शैक्षिक प्रणाली का महत्वपूर्ण स्तंभ है। यह वह निर्णायक चरण है जहाँ विद्यार्थी न केवल विषयगत ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान कौशल और नैतिक मूल्यों का विकास भी करते हैं। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक विद्यार्थियों के भविष्य का निर्माण करने के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण की नींव रखते हैं। वर्तमान परिदृश्य में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक अनेक गंभीर व्यावसायिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इनमें कार्यभार की अधिकता, अपर्याप्त भौतिक एवं डिजिटल संसाधन, प्रौद्योगिकी अनुकूलन में कठिनाई, छात्रों की विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, अनुशासन संबंधी समस्याएँ, प्रशासनिक दबाव, कम वेतन, व्यावसायिक असुरक्षा तथा माता-पिता एवं समाज का बढ़ता दबाव प्रमुख हैं। ये चुनौतियाँ शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, कार्य संतुष्टि और व्यावसायिक उत्साह को प्रभावित करती हैं, जिससे उनकी शिक्षण दक्षता में निरंतर कमी आ रही है। प्रस्तुत शोध पत्र माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण करता है तथा इन चुनौतियों के शिक्षण दक्षता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करता है। शोध में मुख्य रूप से गुणात्मक पद्धति अपनाई गई है तथा द्वितीयक स्रोतों जैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विभिन्न शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों और संबंधित साहित्य का उपयोग किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि कार्यभार संतुलन की कमी, संसाधनों का अभाव और व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की कमी शिक्षण की गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करती है। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों, बेहतर कार्य-जीवन संतुलन, पर्याप्त संसाधनों, प्रोत्साहन योजनाओं तथा NEP 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन से शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। यह शोध शिक्षक सशक्तिकरण की दिशा में नीति निर्माताओं, शैक्षिक संस्थानों और शिक्षाविदों के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करता है। शिक्षकों को सशक्त बनाना ही गुणवत्तापूर्ण माध्यमिक शिक्षा सुनिश्चित करने का सर्वोत्तम मार्ग है।

मुख्य शब्द: माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक, व्यावसायिक चुनौतियाँ, शिक्षण दक्षता, कार्यभार, व्यावसायिक विकास, NEP 2020, कार्य संतुष्टि, शिक्षण प्रभावशीलता, निरंतर प्रशिक्षण, बर्नआउट, डिजिटल शिक्षा।

प्रस्तावना:

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास की आधारशिला है तथा शिक्षक इस प्रक्रिया के प्रमुख वाहक होते हैं। माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 9 से 12) विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत निर्णायक चरण है, जहाँ न केवल विषयगत ज्ञान का हस्तांतरण होता है बल्कि आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, नैतिक मूल्य तथा व्यावसायिक कौशल का विकास भी होता है। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा एवं रोजगार की तैयारी के लिए तैयार करते हैं। भारत में माध्यमिक शिक्षा का विस्तार तो हुआ है, परंतु गुणवत्ता अभी भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में शिक्षकों को व्यावसायिक विकास का केंद्रबिंदु माना गया है। नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षकों की निरंतर व्यावसायिक क्षमता वृद्धि (Continuous Professional Development) के बिना शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार संभव नहीं है। वर्तमान समय में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक अनेक व्यावसायिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इनमें कार्यभार की अधिकता, अपर्याप्त भौतिक संसाधन, प्रौद्योगिकी के अनुकूलन में कठिनाई, छात्रों की विविध पृष्ठभूमि, अनुशासन संबंधी समस्याएँ, कम वेतन, प्रशासनिक दबाव, माता-

पिता की बढ़ती अपेक्षाएँ तथा बर्नआउट (Burnout) जैसी स्थितियाँ प्रमुख हैं। ये चुनौतियाँ शिक्षकों की शिक्षण दक्षता को सीधे प्रभावित करती हैं।

शिक्षण दक्षता से आशय शिक्षक की उस क्षमता से है जिसमें वह प्रभावी शिक्षण विधियों, कक्षा प्रबंधन, विद्यार्थी मूल्यांकन तथा अधिगम परिणामों के माध्यम से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सार्थक योगदान दे सके। जब शिक्षक व्यावसायिक चुनौतियों से घिर जाते हैं तो उनकी रचनात्मकता, प्रेरणा तथा प्रदर्शन में कमी आती है, जिसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों के शैक्षिक परिणामों पर पड़ता है।

झारखंड जैसे राज्यों में ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण है, जहाँ शिक्षकों की कमी, बुनियादी सुविधाओं का अभाव तथा डिजिटल विभाजन स्पष्ट दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक चुनौतियों का विश्लेषण करना तथा इनके शिक्षण दक्षता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना है। साथ ही व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना है।

यह अध्ययन NEP 2020 की भावना के अनुरूप शिक्षक सशक्तिकरण की दिशा में एक छोटा प्रयास है।

साहित्य समीक्षा

विभिन्न शोधों में पाया गया है कि शिक्षकों की व्यावसायिक चुनौतियाँ और शिक्षण दक्षता के बीच घनिष्ठ संबंध है। नवीन त्यागी (2022) के शोध में माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण दक्षता और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संबंध पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने पाया कि निरंतर प्रशिक्षण से दक्षता बढ़ती है।

एक अन्य अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और कार्य संतुष्टि पर शैक्षिक योग्यता के प्रभाव का परीक्षण किया गया, जिसमें उच्च योग्यता वाले शिक्षकों में बेहतर दक्षता पाई गई, लेकिन कार्य संतुष्टि कम होने से प्रभाव कम हो जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भों में भी कार्यभार, संसाधनों की कमी और डिजिटल डिवाइड को प्रमुख चुनौतियाँ माना गया है। NEP 2020 में व्यावसायिक विकास, निरंतर सीखने और प्रौद्योगिकी एकीकरण पर जोर दिया गया है।

व्यावसायिक चुनौतियाँ

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियों का सामना करते हैं:

- **कार्यभार की अधिकता:** माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर शिक्षण कार्य के साथ-साथ अनेक गैर-शिक्षण कार्यों का बोझ रहता है। परीक्षा संबंधी जिम्मेदारियाँ, प्रशासनिक कार्य, रिपोर्ट लेखन, अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियाँ तथा बैठकें उनके समय का बड़ा हिस्सा ले लेती हैं। अध्ययनों के अनुसार कई शिक्षक अपने कुल कार्य समय का 30-50% गैर-शिक्षण कार्यों में व्यतीत करते हैं। इससे शिक्षण की तैयारी और नवाचार के लिए समय नहीं बच पाता, जिससे थकान और तनाव बढ़ता है।
- **अपर्याप्त संसाधन और बुनियादी ढाँचा:** ग्रामीण तथा अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालयों में प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, स्मार्ट क्लासरूम, कंप्यूटर और इंटरनेट जैसी बुनियादी सुविधाओं का घोर अभाव है। शिक्षक बिना उचित उपकरणों के प्रभावी शिक्षण नहीं कर पाते। इससे व्यावहारिक शिक्षा प्रभावित होती है और विद्यार्थी आधुनिक ज्ञान से वंचित रह जाते हैं।

प्रौद्योगिकी अनुकूलन

कोविड-19 महामारी के बाद ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षण की माँग बहुत बढ़ गई है। लेकिन अधिकांश माध्यमिक शिक्षक डिजिटल टूल्स, सॉफ्टवेयर और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के उपयोग में प्रशिक्षित नहीं हैं। तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण वे नई शिक्षण विधियों को अपनाने में असमर्थ रहते हैं, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

- **छात्रों की विविधता और व्यवहार संबंधी समस्याएँ:** आज के माध्यमिक कक्षाओं में छात्र विभिन्न सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमि से आते हैं। कई विद्यार्थियों में ध्यान की कमी, अनुशासनहीनता, मोबाइल व्यसन तथा भावनात्मक समस्याएँ आम हैं। शिक्षक इन विविध आवश्यकताओं को पूरा करने और कक्षा प्रबंधन करने में कठिनाई महसूस करते हैं।
- **आर्थिक और व्यावसायिक असुरक्षा:** विशेषकर निजी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों को कम वेतन, अनुबंध आधारित नियुक्ति और कोई सुरक्षा नहीं मिलती। पदोन्नति की संभावनाएँ नगण्य हैं तथा नौकरी की असुरक्षा बनी रहती है। आर्थिक तंगी और भविष्य की अनिश्चितता के कारण शिक्षक पूर्ण रूप से शिक्षण में समर्पित नहीं हो पाते।
- **व्यावसायिक विकास की कमी:** अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ या रिफ्रेशर कोर्स नहीं चलाए जाते। नई शिक्षण तकनीकों, पाठ्यक्रम परिवर्तनों और शैक्षिक शोध से शिक्षक अपडेट नहीं रह पाते। इससे उनकी व्यावसायिक वृद्धि रुक जाती है और शिक्षण दक्षता प्रभावित होती है।
- **माता-पिता और समाज का दबाव:** आधुनिक समय में माता-पिता की अपेक्षाएँ बहुत बढ़ गई हैं। वे अच्छे अंकों, प्रतिस्पर्धी परिणामों और व्यक्तिगत ध्यान की माँग करते हैं। साथ ही समाज में शिक्षक सम्मान में कमी आई है। लगातार शिकायतें, तुलना और दबाव के कारण शिक्षक मानसिक तनाव में रहते हैं, जो उनके प्रदर्शन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

शिक्षण दक्षता पर प्रभाव:

ये चुनौतियाँ शिक्षण दक्षता को निम्न रूप से प्रभावित करती हैं:

- **कक्षा प्रबंधन:** व्यावसायिक चुनौतियों के कारण शिक्षक लगातार थकान और मानसिक तनाव से ग्रस्त रहते हैं। इससे कक्षा में अनुशासन बनाए रखना, छात्रों की गतिविधियों पर नजर रखना और सकारात्मक वातावरण निर्माण करना कठिन हो जाता है। प्रभावी कक्षा प्रबंधन की कमी से विद्यार्थियों का ध्यान बंटता है, शोर बढ़ता है और समग्र शिक्षण वातावरण बिगड़ जाता है, जिससे अधिगम प्रक्रिया प्रभावित होती है।
- **शिक्षण विधियों:** चुनौतियों से जूझ रहे शिक्षक समय की कमी और थकान के कारण नवाचारी शिक्षण विधियों जैसे प्रोजेक्ट आधारित, सहयोगी, प्रयोगात्मक या डिजिटल शिक्षण को अपनाने में असमर्थ रहते हैं। वे अधिकतर पारंपरिक व्याख्यान पद्धति पर निर्भर रहते हैं। इससे विद्यार्थियों में रुचि कम होती है और आधुनिक कौशल विकास प्रभावित होता है।
- **छात्र अधिगम:** शिक्षकों में कम प्रेरणा और ऊर्जा की कमी के कारण वे प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत ध्यान नहीं दे पाते। इससे कमजोर छात्रों की समस्याएँ अनसुलझी रह जाती हैं। परिणामस्वरूप छात्रों का अधिगम स्तर गिरता है, परीक्षा परिणाम खराब होते हैं और समग्र शैक्षिक विकास प्रभावित होता है।
- **व्यक्तिगत विकास:** लगातार तनाव और चुनौतियों से शिक्षक बर्नआउट (Burnout) की स्थिति में पहुँच जाते हैं। इससे उनकी रचनात्मकता, नवाचार की क्षमता और व्यावसायिक उत्साह में तेजी से कमी आती है। शिक्षक स्वयं का विकास करने, नई तकनीकें सीखने या शोध कार्य करने में रुचि खो बैठते हैं, जो लंबे समय में उनकी शिक्षण दक्षता को गंभीर रूप से कम कर देता है।

अध्ययन विधि:
यह गुणात्मक समीक्षा आधारित शोध पत्र है। द्वितीयक स्रोतों (शोध पत्र, रिपोर्ट, NEP 2020, सरकारी दस्तावेज) का उपयोग किया गया। झारखंड सहित विभिन्न राज्यों के संदर्भ शामिल किए गए।

सुझाव और समाधान

- **निरंतर व्यावसायिक विकास:** शिक्षकों के लिए सालाना अनिवार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और रिफ्रेशर कोर्स आयोजित किए जाएँ। DIKSHA, SWAYAM, NPTEL जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से नई शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम अपडेट और डिजिटल कौशल का प्रशिक्षण दिया जाए। इससे शिक्षक आधुनिक तकनीकों से अपडेट रहेंगे और उनकी शिक्षण दक्षता में निरंतर वृद्धि होगी।
- **कार्यभार संतुलन:** शिक्षण कार्य से अलग प्रशासनिक कार्यों, रिपोर्टिंग, परीक्षा प्रबंधन और अतिरिक्त गतिविधियों के लिए पर्याप्त सहायक स्टाफ (क्लर्क, डाटा एंट्री ऑपरेटर, लैब असिस्टेंट) उपलब्ध कराया जाए। इससे शिक्षकों का समय मुख्य रूप से कक्षा शिक्षण और विद्यार्थी मार्गदर्शन में लगेगा, जिससे थकान कम होगी और शिक्षण गुणवत्ता बढ़ेगी।
- **संसाधन सुधार:** सभी माध्यमिक विद्यालयों में आधुनिक प्रयोगशालाएँ, सुसज्जित पुस्तकालय, स्मार्ट क्लासरूम, कंप्यूटर और उच्च गति इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराई जाए। ग्रामीण क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाए। उचित संसाधनों से शिक्षक प्रभावी, व्यावहारिक और नवाचारी शिक्षण दे सकेंगे तथा विद्यार्थी बेहतर अधिगम प्राप्त कर सकेंगे।
- **प्रोत्साहन:** शिक्षकों के लिए बेहतर वेतन संरचना, प्रदर्शन आधारित वार्षिक वेतन वृद्धि, समय पर पदोन्नति और उत्कृष्ट कार्य के लिए राज्य/राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार दिए जाएँ। इन प्रोत्साहनों से शिक्षकों का मनोबल बढ़ेगा, कार्य संतुष्टि होगी और वे पूर्ण समर्पण के साथ शिक्षण कार्य करेंगे।
- **समावेशी नीतियाँ:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को मजबूत किया जाए। शिक्षक भर्ती, प्रशिक्षण और मूल्यांकन में समावेशी, पारदर्शी और गुणवत्ता आधारित नीतियाँ लागू की जाएँ। शिक्षक शिक्षा संस्थानों को सुदृढ़ कर निरंतर व्यावसायिक विकास को अनिवार्य बनाया जाए, ताकि शिक्षक अपनी भूमिका के अनुरूप तैयार हो सकें।
- **मनोवैज्ञानिक सहायता:** प्रत्येक विद्यालय या ब्लॉक स्तर पर शिक्षकों के लिए नियमित काउंसलिंग सत्र, तनाव प्रबंधन कार्यशालाएँ और मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम चलाए जाएँ। योग, ध्यान और मनोवैज्ञानिक सहायता से बर्नआउट की समस्या कम होगी, जिससे शिक्षकों की भावनात्मक स्थिरता बनी रहेगी और वे बेहतर शिक्षण दे सकेंगे।

निष्कर्ष:
माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक चुनौतियाँ उनकी शिक्षण दक्षता को गहराई से प्रभावित करती हैं। कार्यभार की अधिकता, संसाधनों की कमी, प्रौद्योगिकी अनुकूलन की चुनौती, आर्थिक असुरक्षा, व्यावसायिक विकास का अभाव तथा माता-पिता का दबाव जैसे कारक शिक्षकों में तनाव, बर्नआउट और रचनात्मकता की कमी पैदा करते हैं। परिणामस्वरूप कक्षा प्रबंधन, नवाचारी शिक्षण विधियों का उपयोग तथा व्यक्तिगत छात्र ध्यान प्रभावित होता है, जिससे विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों की गुणवत्ता गिरती है। माध्यमिक स्तर पर शिक्षण दक्षता का ह्रास न केवल व्यक्तिगत विद्यार्थियों के भविष्य को प्रभावित करता है, बल्कि समग्र राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को भी कमजोर करता है। क्योंकि यही विद्यार्थी कल देश के भविष्य के नागरिक, वैज्ञानिक, शिक्षक और नेता बनेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इस तथ्य को स्वीकार करती है कि शिक्षक ही शिक्षा व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। इन चुनौतियों का समाधान नीतिगत हस्तक्षेप, संस्थागत सुधार और व्यक्तिगत प्रयासों के संयुक्त प्रयास से संभव है। निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रम, उचित कार्यभार संतुलन, पर्याप्त संसाधन, बेहतर वेतन संरचना, मनोवैज्ञानिक सहायता तथा NEP 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन से शिक्षकों को सशक्त बनाया जा सकता है।
जब शिक्षक स्वयं सशक्त, प्रेरित और कुशल होंगे, तभी वे विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल और मूल्यों का समुचित विकास कर सकेंगे। अतः शिक्षकों के व्यावसायिक सशक्तिकरण को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना समय की माँग है। शिक्षकों को सशक्त बनाकर हम एक बेहतर, समृद्ध और विकसित शैक्षिक भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

संदर्भ सूची:

1. Tyagi, N. (2022). माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन। शोधगंगोत्री, आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ।
2. कुमार, स. (2021). अध्यापक शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन। IJESRR.
3. यादव, र. न. & बाजपेयी, न. (2024). माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन। JAAFR.
4. National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India.
5. Verma, A. (2018). शिक्षकों के व्यावसायिक विकास एवं शिक्षण दक्षता का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन। JETIR.
6. Jena, M. K. (2024). Professional Development of Secondary School Teachers. IJSMRST.
7. Garg, D. (2025). Study of Self-Efficacy, Life Satisfaction, and Professional Commitment of Secondary School Teachers. JMSR.
8. Aier, S. (2025). A Quantitative Study of Secondary School Teachers: Exploring the Relationship between Teachers' Professional Adjustment, Teacher Effectiveness, Training and Experience. EJPER.
9. Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi.
10. शिंदे, एल. (2014). शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्म संकल्पना। विभिन्न शोध पत्रिकाएँ।